शिव ॐ साई
प्रकाशन

SHIV OM SAI PRAKASHAN

95/3 Vallabh Nagar, Indore-03 (M.P.) India T: +91 731 4225754, 2530217

भारतीय दर्शन विश्व की धरोहर

'अनेक संस्कृतियों को एक करती'काशी मरणान्मुक्ति"

15 मार्च 2012, काठमांडू (नेपाल), पशुपति नाथ की नगरी काठमांडू (नेपाल) में पशु से पशुपति होने की कथा पर आधारित पुस्तक एवं उसके लेखक को नेपाल के राष्ट्रपति डॉ. रामबरन यादव ने आमंत्रित और सम्मान किया|
मिथिला में पले- बढ़े और कलकत्ता में दस वर्ष रहने वाले श्री रामबरन यादव, राष्ट्रपति नेपाल का कहना था, "यह पुस्तक भारतीय दर्शन की विश्व में धरोहर है| गंगा-यमुना संस्कृति, हिमालय, गीता आदि दोनों राष्ट्र को एक करते है| काशी पर पुस्तक और पाशुपत योग यह ही भारत और नेपाल कि सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है| मैं राष्ट्रपति होकर राष्ट्र-धर्म निभा रहा हूँ परन्तु श्री मनोज ठक्कर जैसे फकीर, विद्वान, मनोवैज्ञानिक या उससे ऊपर गुरु जो सभी युवाओं को मार्गदर्शन दे व्यावसायिक जगत में भी आगे बढ़ा रहे है, उनके जैसे व्यक्तियों कि आवश्यकता हर देश को है| यह अपने आप में समाज सेवा कि अनूठी मिसाल है, इसके लिए वे सम्मान और धन्यवाद के पात्र है|" साथ ही उन्होंने यूनाइटेड वर्क्स कार्पोरेशन श्री ठक्कर के छात्रो द्वारा स्थापित एक व्यवसायिक संस्थान को नेपाल में आकर नई इंडस्ट्री लगाने का प्रस्ताव दिया और अगर ऐसा होता है तो यहाँ की सरकार उनकी पूरी मदद करेगी|

आत्मा को झकझोरने वाले दार्शनिक उपन्यास काशी मरणान्मुक्ति की वलयाकार वृद्धि अब एकमात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल की धरा तक पहुँच गई है| पुस्तक की भी अपनी एक यात्रा होती है और इस पुस्तक के लिए तो लेखकों की मान्यता है, "यह एक गुरुप्रसाद है और वे मात्र माध्यम है जिन्हें इस प्रसाद को जनसाधारण तक पहुंचाना है|" लेखकों एवं प्रकाशकों ने इस

पुस्तक की गति को अनुभव किया है और इसकी गूढता का परिणाम इसके बढ़ते पाठकगण एवं कई दर्शनप्रेमियों से मिले शुभ संदेशों से मिलता है| दर्शन प्रेमियों में श्रीमती इंदु जैन, नारायण मूर्तिजी, शशि थरूर, सलमान खुर्शीद, कर्मापा, दलाई लामा, मोरिशियस राष्ट्रपति अनिरुद्ध जगन्नाथ आदि शामिल है और सभी ने इस पुस्तक के संदेशों और भारतीय दर्शन की सराहना की|

इस पुस्तक के लेखक मनोज ठक्कर एवं रश्मि छाजेड़ ने पशु(मानव) से पशुपति(शिव) की यात्रा का इतना प्रभावशाली वर्णन किया है कि विषय गहरा होने पर भी सहज लगता है| मनोज ठक्कर जी देश को युवा के लिए अपने स्तर पर व्यवसायिक एवं अध्यात्मिक साम्य पर कार्यरत है और उनका मानना है भारतीय युवा प्रज्ञा एवं उर्जा के धनी है उनकी ऊर्जा संचरण की सही दिशा, भारत को विश्व में एक शक्ति के रूप में खड़ा कर सकती है| वे एक गृहस्थ सन्यासी है जो आज के परिवेश में युवाओं की परेशानियों का निदान कर, उन्हें अपने कार्यो के साथ मानसिक शांति और अध्यात्म की ओर प्रेरित करते है|

गुरु के रूप में वे कहते है कि वास्तविक गुरु वे है जो अपने शिष्य को बनाने में विश्वास रखते है, अपने बनने में नहीं| 'काशी मरणान्मुक्ति' उपन्यास भी गुरु एवं शिष्य के सम्बन्ध पर आधारित है जहाँ कर्मकाण्ड की प्रधानता नहीं अपितु लक्ष्य प्रधानता केन्द्रित है| ' काशी मरणान्मुक्ति' हिन्दू दर्शन एवं अध्यात्म के कई ऐसे अध्यायों का अवतरण करता है कि पाठक उस भवसागर में तैरता किसी प्रेरणा को लेकर ही वहां से निकलता है|

श्री ठक्कर ने इस पुस्तक को कभी बेचने का निर्णय नहीं लिया था, पर प्रकाशन एवं उनके शिष्यों के जोर देने पर वे इस शर्त पर तैयार हुए कि इसके विक्रय से प्राप्त राशि का उपयोग मात्र समाज कल्याण हेतु किया जाएगा| इसी प्रयास में पिछले माह पहला कदम इंदौर में एक ज़मीन खरीद कर लिया गया और इस भूमि पर मानसिक विकलांग बच्चों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर का एक संस्थान तैयार किया जाएगा, जो उन्हें आम बच्चों जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराये|